IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

मनोज कुमार श्रीवास्तव
शोध छात्र, डॉ. राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, अयोध्या, उ.प्र.
editorsarvam@gmail.com

शोध सारांश: प्रस्तुत शोधकार्य बीएड के ग्रामीण एवं शहरी प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के उद्देश्य से किया गया था। शोधकार्य में वर्णनात्मक शोध के अंतर्गत सर्वेक्षण अनुसंधान का प्रयोग किया गया। शोधकार्य हेतु नुयादार्ष के रूप में 285 छात्राध्यापकों एवं 315 छात्राध्यापिकाओं का चयन देव प्रतिदर्श विधि द्वारा किया गया। शोधकार्य के प्रदत्तों की प्राप्ति डॉ० एन०के० चड्ढा एवं डॉ० उषा गणेशन (2020) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक बुद्धि मापनी द्वारा की गयी। अध्ययन के उपरान्त निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता।

बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

शिक्षा द्वारा ही व्यक्ति के चिंतन, चरित्र तथा व्यवहार में परिष्कृत दृष्टिकोण का विकास किया जाता है। सामाजिक न्याय और लोकतन्त्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि देश के प्रत्येक नागरिक को शिक्षा सुलभ हो। लोकतंत्र का आधार शिक्षा और शिक्षित नागरिक होते हैं। शिक्षा एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसका कोई अन्त नहीं है। मानव जन्म से लेकर अपने अस्तित्व के धूमिल होने तक शिक्षारत रहता है। सभी देशों में सामान्य शिक्षा का उद्देश्य बालकों को उन प्रविधियों से अवगत कराना है, जिससे की उन्हें आगे की शिक्षा प्राप्त करने में सुगमता हो तथा अपने वातावरण के प्रति उत्तरदायित्वों को समझने तथा जीवन निर्वहन करने के योग्य बनाना है। बीएड में छात्र उन विधियों, प्रविधियों तथा उपकरणों को समझ जाता है जिनका उपयोग वह अन्यों की शिक्षा के लिए करता है। बीएड पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों का सर्वांगीण विकास करके राष्ट्रीय विकास व एकीकरण को सुनिश्चित करने हेतु कुशल अध्यापकों का निर्माण करना है। अध्यापक शिक्षा, उच्च शिक्षित समाज के द्वार खोलती है तथा प्रशिक्षुओं को रोजगार व जीवन-यापन के क्षेत्र के लिए तैयार करती है। कुशलता की ओर अग्रसर और विकास करता हुआ विद्यार्थी न केवल शारीरिक, बौद्धिक और संवेगात्मक व्यवहार में बल्कि सामाजिक रूप से भी उन्नति करता है। सामाजिक विकास के फलस्वरूप उसे सामाजिकता प्राप्त होती है।

सामाजिकता व्यक्ति के व्यवहार को सकारात्मक एवं नकारात्मक स्वीकृत के साथ अदल-बदल कर प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है। यह सामान्य स्वीकृति अथवा कुछ अन्य चीजों की अस्वीकृति को आगे ले जाती है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व पर सामाजिक समूह, औपचारिकता, अनौपचारिकता के प्रभाव को महत्व देती है। सामाजिक बुद्धि का तात्पर्य लाभ या सामाजिक अपेक्षानुसार बर्ताव करने की योग्यता से है। इसको उस प्रक्रिया जिसके द्वारा वृहद विशेषताओं के साथ जन्मा व्यक्ति वास्तविक सामाजिक बर्ताव का प्रदर्शन करता है के रूप में परिभाषित किया गया है। यह विशेषता व्यक्ति के समुदाय के आदर्शों के अनुसार इसके लिए प्रथागत और स्वीकार करने के योग्य जीवन जीने से सम्बंधित है। सामाजिक बुद्धि का सम्बन्ध सामाजिक क्षमताओं जैसे आत्मपर्याप्ति व्यवसायिक क्रियाओं, अभिव्यक्ति, आत्म निर्देशन और सामाजिक कार्यों में हिस्सेदारी से है। इसे सामाजिक सक्षमता, व्यक्तिगत आत्मनिर्भरता तथा सामाजिक जिम्मेदारी को प्रकट करने के लिए मानवीय मस्तिष्क के कार्य करने की योग्यता की तरह व्याख्यायित किया जाता है। इस सक्षमता का मापन प्रगतिशील रूप में किया जा सकता है। इस प्रकार व्यक्ति सामाजिक रूप से सक्षम है तब इसका यह मतलब होता है कि वह सामाजिक रूप से परिपक्व है। अब वर्तमान में विद्यार्थियों में सामाजिक बौद्धिकता की उत्पत्ति शिक्षा का एक विशिष्ट उद्देश्य है क्योंकि सामाजिक बुद्धि की उन्नति जीवन का एक महत्वपूर्ण पक्ष है।

रॉय (2001) ने आर्थिक-सामाजिक परिस्थिति के तनाव के कारण व्यक्ति के व्यवहार में, कार्य में और व्यक्तित्व पर होने वाले प्रभावों का अध्ययन कर निष्कर्ष प्राप्त किया कि सामाजिक बुद्धिमत्ता व्यक्ति के कार्यों पर सार्थक प्रभाव डालती है। राठी (2002) ने सामाजिक बुद्धिमत्ता का व्यावसायिक स्वक्षमता पर होने वाले परिणाम का तुलनात्मक अभ्यास विषय पर अनुसंधान कार्य किया। शोध के निष्कर्ष रूप में पाया गया कि सामाजिक बुद्धिमत्ता और व्यावसायिक बुद्धिमत्ता और व्यावसायिक स्वक्षमता में धनात्मक सहसम्बन्ध होता है। कुमार एवं पटनायक (2004) ने स्नातकोत्तर अध्यापकों के संगठनात्मक वचनबद्धता, सामाजिक बुद्धि, कार्य के प्रति अभिवृत्ति एवं सन्तुष्टि का अध्ययन विषय पर शोध किया एवं निष्कर्ष प्राप्त किये कि आयु, लिंग, शैक्षिक अनुभव के आधार पर व्यावसायिक संतुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। 40 वर्ष से अधिक तथा 12 वर्ष से कम शैक्षिक अनुभव प्राप्त महिला अध्यापकों में प्रशासनिक वचनबद्धता तुलनात्मक रूप से अधिक पायी गयी। उपाध्याय (2007) ने विविध सामाजिक आर्थिक स्तर

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

के शिक्षक-शिक्षिकाओं की बुद्धिमत्ता का उनके शैक्षिक अभिवृत्ति पर होने वाला प्रभाव का अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया एवं निष्कर्ष प्रतिपादित किया कि सामाजिक आर्थिक स्तर सामाजिक बुद्धिमत्ता से सार्थक रूप से सहसम्बन्धित था। शर्मा (2007) ने माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सामाजिक बुद्धिलब्धि एवं भारतीय संस्कृति के ज्ञान स्तर का अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि सामाजिक बुद्धि माध्यमिक स्तर की छात्राओं की अपेक्षा छात्रों में अधिक पायी गयी तथा भारतीय संस्कृति का ज्ञान छात्राओं में अधिक स्थाई पाया गया। शर्मा (2011) ने महाविद्यालयी अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों की सांवेगिक व सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर अध्ययन किया। शोध के निष्कर्ष में पाया गया कि अंतर्मुखी छात्रों की संवेगात्मक एवं सामाजिक बुद्धि की तुलना में बहिर्मुखी छात्रों की संवेगात्मक एवं सामाजिक बुद्धि अधिक होती है, इसके विपरीत बहिर्मुखी छात्र व्यवहारिक होने के कारण अधिक संवेगात्मक एवं सामाजिक बुद्धि रखते पाए गये। मीणा (2012) ने बीएड विद्यार्थियों में आत्मनियन्त्रण, सामाजिक बुद्धि एवं विद्यार्थियों की सम्पूर्ण जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध विषयक शोधकार्य किया एवं निष्कर्ष प्राप्त किये कि आत्मनियंत्रण, सामाजिक बुद्धि एवं जीवन संतुष्टि में कोई सार्थक सहसम्बन्ध नहीं पाया गया। स्वाति (2019) ने सामाजिक सहयोग, जीवन सन्तुष्टि और अनुकरणीय व्यवहार पर धार्मिकता के प्रभाव का अध्ययन शीर्षक पर शोध कार्य किया। शोध के निष्कर्ष में पाया कि धार्मिक आध्यात्मिक ज्ञान और धार्मिक कृत्य का सामाजिक अनुभवों से कोई सार्थक सम्बन्ध नहीं पाया गया। सामाजिक सहयोग का सामाजिक बुद्धि पर सार्थक प्रभाव पाया गया। हसनैन एवं अन्य (2011) ने विवाहित और अविवाहित कार्यशील महिलाओं में सामाजिक बुद्धि और आत्म बोध विषय पर शोधकार्य किया और निष्कर्ष प्राप्त किया कि कार्यशील महिलाओं में सामाजिक बुद्धि और निम्न आत्म बोध अकार्यशील महिलाओं से अधिक पाया गया। विवाहित और अविवाहित महिलाओं में सामाजिक बुद्धि और आत्म-बोध में सार्थक अन्तर पाया गया।

इस प्रकार पर्याप्त साहित्य विश्लेषण के फलस्वरूप यह ज्ञात हुआ कि बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन विषयक शोध कार्यों का अभाव था। अतः शोधकर्ता ने बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर शोधकार्य करने का निश्चय किया।

अध्ययन के उद्देश्य

1. बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. बीएड के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. बीएड के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं

1. बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
2. बीएड के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
3. बीएड की शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध अध्ययन की विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक शोध अध्ययन विधि के अंतर्गत सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

जनसँख्या, न्यादर्श एवं न्यादर्शन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में अम्बेडकरनगर जनपद के बीएड के समस्त विद्यार्थी जनसँख्या थे। यह एक परिमित जनसँख्या थी। इस परिमित जनसँख्या से यादृच्छिक न्यादर्शन विधि की सहायता से 600 प्रशिक्षुओं का चयन किया गया, जिसमें 315 छात्राध्यापिकाएं व 285 छात्राध्यापक चयनित किये गए।

शोधकार्य में प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त उपकरणों का विवरण तालिका-1 में प्रस्तुत है :

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

तालिका-1:अनुसंधान कार्य में प्रयुक्त उपकरण

क्रम सं०	प्रयुक्त उपकरण	उपकरण के उपयोग का उद्देश्य
1	स्वनिर्मित व्यक्तिगत सूचना प्रपत्र	व्यक्तिगत सुचना प्राप्ति हेतु
2	डॉ० एन०के० चड्ढा एवं डॉ० उषा गणेशन (2020) द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत सामाजिक बुद्धि मापनी	सामाजिक बुद्धि का मापन

प्रदत्त विश्लेषण एवं परिणाम

चयनित न्यादर्श पर उपकरणों के प्रशासन के उपरान्त प्राप्त प्रदत्तों का उपयुक्त रीति से व्यवस्थापन किया गया, जिसका प्रस्तुतीकरण तालिका-2 में किया गया है-

तालिका-2: चयनित न्यादर्श से प्राप्त प्रदत्त

क्रम संख्या	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्राश	क्रांतिक अनुपात	सार्थकता
1	शहरी प्रशिक्षु	303	89.23	11.14	598	1.14	0.5 स्तर पर सार्थक नहीं
	ग्रामीण प्रशिक्षु	297	88.22	10.80			
2	शहरी छात्राध्यापक	138	89.58	10.22	283	1.48	0.5 स्तर पर सार्थक नहीं
	ग्रामीण छात्राध्यापक	147	87.83	9.81			
3	शहरी छात्राध्यापिकाएं	165	90.41	10.52	313	1.44	0.5 स्तर पर सार्थक नहीं
	ग्रामीण छात्राध्यापिकाएं	150	88.62	11.61			

प्रस्तुत शोध कार्य का प्रथम उद्देश्य बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना था। प्रथम उदेश्य के अनुरूप अध्ययन की शून्य परिकल्पना ($H_0$1) 'बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' थी। प्रथम उद्देश्य की पूर्ति हेतु संकलित प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का मान तालिका-2 में प्रदर्शित है। तालिका-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी प्रशिक्षुओं के समूह (N=303) का मध्यमान 89.23, मानक विचलन 11.14 था। इसी प्रकार ग्रामीण प्रशिक्षुओं के समूह (N=297) का मध्यमान 88.22, मानक विचलन 10.80 था। दोनों समूहों के मध्य परिकलित क्रांतिक अनुपात का मान 1.14 था जो कि .05 सार्थकता स्तर पर 598 स्वतंत्राश हेतु निर्धारित तालिका मान से कम था। अतः शून्य परिकल्पना ($H_0$1) 'बीएड के शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' स्वीकृत की गयी। अतः शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर पाया गया।

प्रस्तुत शोध कार्य का द्वितीय उद्देश्य बीएड के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन करना था। द्वितीय उद्देश्य के अनुरूप अध्ययन की शून्य परिकल्पना ($H_0$2) 'बीएड के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' थी। द्वितीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु संकलित प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का मान तालिका-2 में प्रदर्शित है। तालिका-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी छात्राध्यापकों के समूह (N=138) का मध्यमान 89.58 , मानक विचलन 10.22 था। इसी प्रकार ग्रामीण छात्राध्यापकों के समूह (N=147) का मध्यमान 87.83, मानक विचलन 9.81 था। दोनों समूहों के मध्य परिकलित क्रांतिक अनुपात का मान 1.48 था जो कि .05 सार्थकता स्तर पर 283 स्वतंत्राश हेतु निर्धारित तालिका मान से कम था। अतः शून्य परिकल्पना ($H_0$2) 'बीएड के शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' स्वीकृत की गयी। अतः शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

प्रस्तुत शोध कार्य का तृतीय उद्देश्य बीएड की शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि का अध्ययन करना था। तृतीय उद्देश्य के अनुरूप अध्ययन की शून्य परिकल्पना ($H_0$3) 'बीएड की शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' थी। तृतीय उद्देश्य की पूर्ति हेतु संकलित प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात का मान तालिक-2 में प्रदर्शित है। तालिका-2 के अवलोकन से स्पष्ट है कि शहरी छात्राध्यापिकाओं के समूह (N=165) का मध्यमान 90.41, मानक विचलन 10.52 था। इसी प्रकार ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं के समूह (N=150) का मध्यमान 88.62, मानक विचलन 11.61 था। दोनों समूहों के मध्य परिकलित क्रांतिक अनुपात का मान 1.44 था जो कि .05 सार्थकता स्तर पर 313 स्वतंत्राश हेतु निर्धारित तालिका मान से कम था। अतः शून्य परिकल्पना ($H_0$3) 'बीएड की शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है' स्वीकृत की गयी। अतः शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

IJARSCT
ISSN (Online) 2581-9429
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology (IJARSCT)
Volume 3, Issue 1, February 2023
Impact Factor: 7.301

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध अध्ययन से निम्नांकित निष्कर्ष प्राप्त हुए –

- ❖ शहरी एवं ग्रामीण प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- ❖ शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापकों की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
- ❖ शहरी एवं ग्रामीण छात्राध्यापिकाओं की सामाजिक बुद्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत शोध अध्ययन बीएड के प्रशिक्षुओं की सामाजिक बुद्धि एवं उनके रहवास के मध्य अन्तर्वलित संबध के विवेचन हेतु किया गया था। अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में यह प्राप्त हुआ कि रहवास से सामाजिक बुद्धि प्रभावित नहीं होती है। इस निष्कर्ष के प्रकाश में कहा जा सकता है कि किसी प्रशिक्षु को सामाजिक रूप से परिपक्व होने में रहवास के अतिरिक्त अनेकों अन्य दत्त एवं अर्जित शील गुणों की आवश्यकता होती है। समाज द्वारा स्थापित शिक्षा संस्थाओं का यह सम्यक दायित्व होता है कि वे प्रशिक्षुओं में अर्जित शील गुणों का पल्लवन करें जबकि दत्त शील गुणों का परिमार्जन करें।

प्रस्तुत शोध का शैक्षिक निहितार्थ यही है कि बीएड की शिक्षा-प्रशिक्षण संस्थाएं प्रशिक्षुओं के सामाजिक रूप से परिपक्व होने के पथ पर अग्रसर होने में उसकी सहायता करें तथा यथा आवश्यक प्रहस्तन के माध्यम से उसके व्यक्तिगत एवं सामाजिक गुणों का विकास करें।

ग्रन्थ सूची

[1]. Kumar, S., & Patnaik, P. (2004). A study of oraganisational commitment, social intelligence, attitude towards work and job satisfaction. Journal of psychology, 1(3), 34-36.

[2]. Rai, P. (2001). A study of tension due to socio economic status and its impact on role playing and personality of teachers. Indian psychological review, 31(2), 87-89.

[3]. Rathi, N. (2002). A study of social intelligence on professional self-competence. Unpublished doctoral dissertation, Kurukshetra University.

[4]. उपाध्याय, ह. (2007). विविध सामाजिक आर्थिक स्तर के शिक्षक-शिक्षिकाओं की बुद्धिमत्ता का उनके शैक्षिक अभिवृत्ति पर होने वाला प्रभाव का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध छत्रपति साहू जी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर.

[5]. मीना, र. (2012). बी.एड. विद्यार्थियों में आत्मनियन्त्रण, सामाजिक बुद्धि एवं विद्यार्थियों की सम्पूर्ण जीवन सन्तुष्टि के मध्य सहसम्बन्ध. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध राजस्थान विश्वविद्यालय.

[6]. शर्मा, क. (2011). महाविद्यालयी अंतर्मुखी एवं बहिर्मुखी विद्यार्थियों की सांवेगिक व सामाजिक बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध राजस्थान विश्वविद्यालय.

[7]. स्वाती. (2019). सामाजिक सहयोग, जीवन सन्तुष्टि और अनुकरणीय व्यवहार पर धार्मिकता के प्रभाव का अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध राजस्थान विश्वविद्यालय.

[8]. हसन, ए. (2011). विवाहित और अविवाहित कार्यशील महिलाओं में सामाजिक बुद्धि और आत्म बोध. अप्रकाशित शोध प्रबन्ध अलीगढ़ मुश्लिम विश्वविद्यालय.